मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसकी प्रकृति (Interface) क्रियाएँ एवं विविध पूर्ण होती है फलस्वरूप वह उचित-अनुचित तथा अच्छे ~~अच्छे-बिल्कुल-बुरे क्रिया-कलापों उसका करता है~~

कुछ कर्म करते रहते हैं

नीतिशास्त्र समाज में रहने वाले मनुष्यों के ऐच्छिक कर्मों का नियमन मूल्यांकन करके यह बतलाने का प्रयास करता है कि उस कर्म उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ अथवा अच्छा-बुरा है। मनुष्य के आचरण के संबंध में अच्छे-बुरे बतलाने के कारण ही नीतिशास्त्र को "चाहिए" (Ought) अथवा आचरण का विज्ञान कहा जाता है। इसको नीतिशास्त्र को समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा राजनीतिक विज्ञान के विपरीत तथ्यात्मक विज्ञान न कहकर 'नियामक अथवा आदर्शवादी' विज्ञान कहा जाता है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा (Defination of Ethics)

नीतिशास्त्र के विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तरीके से परिभाषित किया है इन परिभाषाओं में उलझने से अच्छा नीतिशास्त्र की शब्द व्युत्पत्ति मूलक परिभाषा जानना अच्छा होगा-

1) नीतिशास्त्र को अंग्रेजी में Ethics कहा जाता है, जो ग्रीक भाषा के Ethos से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ- रीति-रिवाज, अभ्यास अथवा सामाजिक व्यवहार

होता है।

नीतिशास्त्र (ग्रंथ) अंग्रेजी में Moral Philosophy भी कहा जाता है। moral (मॉरल) लैटिन भाषा के mores से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ भी रीति-रिवाज अथवा अभ्यास होता है। इस प्रकार शब्द-व्युत्पत्ति के अनुसार (दोनों ही अर्थों में) नीतिशास्त्र को रीति-रिवाजों, अभ्यास अथवा सामाजिक व्यवहारों का विज्ञान कहा जाता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि नीतिशास्त्र का विकास रीति-रिवाजों से हुआ है। सामाजिक विकास के आरंभ में मनुष्य अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जब एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहना आरंभ किया तो ~~उसे~~ ~~तब ऐसे नियमों की आवश्यकता हुई~~ जो (उनकी) व्यवहारिक आवश्यकताओं में सामंजस्य ला सके। ~~नियम परिवर्तित होते हुए रीति-रिवाज के रूप में प्रचलित हो गये~~ ... ~~साथ रीति-रिवाजों का ... के कानून (Law) तथा संविधान (Constitution) का निर्माण किया गया।~~ वही ... नियम ~~धर्म-भी परिवर्तित होते हुए रीति-रिवाज (Customs) ... रीति-रिवाज ... समाज एवं संस्कृति में तथा दुनिया के ... सामाजिक तथा ... प्रचलित हुआ ... रीति-रिवाजों विकास के साथ ...~~ नैतिक नियमों (सिद्धांतों)

जैसे-जैसे मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गईं ... नियमों की ... मनुष्यों की ... समाज ... नियमों और परम्पराओं का ... रिवाजों का ... दुनिया के ... समाज एवं संस्कृतियाँ ... अधिकार ...

25

निर्माण हेतु किसी आधार नीतिशास्त्र, उस समाज विशेष द्वारा—

5. समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों तथा नैतिक नियमों का तर्क की कसौटी पर कस कर कानून (Law) तथा संविधान (Constitution) का निर्माण किया जाता है। आधुनिक समाज में इतिहास के जानकार, मानव समाज एवं कानून, रीति-रिवाज, नैतिक नियम, विधि तथा संविधान एक समाज में साथ-साथ प्रचलित रहते हैं। इनके मापदण्ड मानव का सुधार अथवा नैतिक उत्थान करना है। इसका प्रमाण दिया जाता है और कहते हैं कि — रीति-रिवाज तथा नैतिक नियमों का पालन लोग अन्तःकरण की आवाज (Sound of Soul) के अनुसार करते हैं जबकि कानून का पालन दण्ड के भय अथवा पुरस्कार के लोभ से करते हैं।

निष्कर्षतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि "नीतिशास्त्र वह नियामक अथवा आदर्शवादी विज्ञान है जिसमें समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्यों के ऐच्छिक तथा अभ्यासजन्य कर्मों का किसी एक सर्वोच्च मापदण्ड (सिद्धांत) के आधार पर निरपेक्ष आलोचनात्मक मूल्यांकन का प्रयास किया जाता है कि मनुष्य का वह कर्म उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ अथवा अच्छा-बुरा है।"

(नीतिशास्त्र की परिभाषा)

परिभाषा के विश्लेषण से नीतिशास्त्र के निम्नलिखित आवश्यक तत्व प्राप्त होते हैं—